VOL- IX | ISSUE- IV | APRIL | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

ब्रह्मराक्षस का शिष्य : वस्तु और शिल्प

कल्पना,
हिसार

सारांश

गजानन माधव मुक्तिबोध की पहचान एक कवि के रूप में अधिक है और एक लेखक के रूप में कम है। उनकी कविताएं, समीक्षाएं और दूसरे गद्य के लेखन से अधिक लोकप्रिय है। उन्होंने कहानी लेखन भी किया है। मुख्य रूप से मुक्तिबोध के तीन कहानी संग्रह प्रकाशित है। विपात्र, सतह से उठता आदमी और काठ का सपना। ब्रह्मराक्षस का शिष्य इसी क्रम की एक कहानी है। जहाँ राक्षस गजानन माधव मुक्तिबोध का एक प्रिय पात्र है, संज्ञा है। आखिर यह लेखक का कौन है? क्या यह कोई मनोरोगी है जो 'स्किब्जोफ्रीनिया से पीड़ित है। या फिर उन असहाय अथवा बेबस और पीड़ित लोगों में से एक है जो बडबडाते और पागल की संज्ञा पाते हमारे आस-पास घूमते नजर आते हैं। कोई अजरज की बात नही कि एक मनोरोगी किस्म का व्यक्ति इस प्रकार का व्यवहार करता है। इसके बारे में लोगों में मान्यता होती है कि यह प्रेतयोनि का व्यक्ति होता है। यह स्थिति वहम और भय दोनों की होती है। परन्तु कहना संगत रहेगा कि वह ब्रह्मराक्षस जो कविता में है और वहा ब्रह्मराक्षस हमारी आलोच्य कहानी में है, उसमें साम्य नही है जमीन और आसमान का अंतर है। यदि कहानी का ब्रह्मराक्षस एक विजेता है तो कविता का ब्रह्मराक्षस एक परास्त है।

कुंजी शब्द *ब्रह्मराक्षस, कहानी, स्किब्जोफ्रीतिया, मनोरोगी, क्रम, असहाय, बेबस, बडबडाना, अचरज, प्रेतयोनि, जीवन और जमीन, साम्य, विजेता।*

"उस महामत्य भक्त की आठवीं मंजिल के जीने से सातवीं मंजिल के जीने की सूनी-सूनी सीढ़ियों पर नीचे उतरते हुए विद्यार्थी का चेहरा भीतर के किसी प्रकाश से लाल हो रहा था।"१ पंक्तियां कहानी की आरम्भ की पंक्तियां है जिसमें एक ब्रह्मराक्षस के भव्य भवन के बारे में बताया गया है यहां की यंत्र वत् व्यवस्था बिन सेवकों के ही हो जाती है। ब्रह्मराक्षस एक गुरू के पद रहकर अपने शिष्य को ब्रह्मचर्य का उपदेश देता है और छंद सिखलाता है। शिष्य उस छंद को महल के मध्य सीढ़ियों पर ही गाने लग जाते हैं।

"मेघैर्मेदुरमम्बरं वनमवः श्यामास्तमाल क्रुमेः
नक्तं भीरूरयं त्वेमवं तादिमे राधे ग्रहं प्रायय।"२

यह सब गुरू के आशीर्वाद एवं ज्ञान का प्रभाव है कि उनका एक विद्यार्थी इस भवन से बारह वर्ष बाद बाहर निकला है और इस छंद में उसे उसके गुरू ने बताया है राधामाधव की यमुना कूल क्रीडा में जाते हुए घाट पर भूली राधा को बुलाने के भाव प्रकट किए हैं।

ब्रह्मराक्षस का शिष्य अब यह सीख गया है कि विद्याध्यन के पश्चात उसके क्या कर्त्तव्य है और परिवार और समाज के प्रति उसका कैसा व्यवहार उसकी करना है। वह अपने को भाग्यशाली मानता है कि उसको ऐसा गुरू मिला है। वह मन और बुद्धि से आत्मकेंद्रित है इसलिए उसे बाहर देखते ही लोग भूत-भूत कहकर भाग खडे हुए है। लोग जानते है कि वह जिस हवेली से बाहर आया वह ब्रह्मराक्षस की रिहायश है। इसके साथ कहानी प्लैशबैक में आ जाती है जो कहानी की एक महत्त्वपूर्ण शैली है, "बारह साल और कुछ दिन पहले-सड़क पर दोपहर के दो बजे एक देहाती लड़का, भूखा प्यासा अपने सूखे होठों पर जीभ फेरता हुआ, उसी बगल वाले ऊँचे सेमल के वृक्ष के नीचे बैठा हुआ था। हवा के झौंको से, फूलों का रेशमी

कपास हवा में तैरता हुआ, दूर-दूर तक इधर-उधर बिखर रहा था। उसके माथे पर फिक्रे गंद्य-बिंद्य रही थी उसने पास में पड़ी एक मोटी ईंट सिरहाने रखी और पेड़ तले लेट गया।''३ इस प्रकार की व्यंजना फ्लैश बैक जिसको की हम पूर्व दिप्ति कहते हैं कहानी की वस्तु को रोचक बना रही है।

कहानी की वस्तु में ब्रह्मराक्षस की बात की जाए जो वह विजेता गुरू है, ठीक वैसा ही जैसा विष्णु पुराण में दैत्य गुरू शक्राचार्य था। उसके तेज का प्रभाव अवर्णनीय है, उसका तथ्य परक पर्सोना था। शायद यह मुक्तिबोध की स्वयं की सोच भी रही होगी कि वह इसी प्रकार का अध्यापक बने और इसी प्रकार की शिक्षा वितरित करे। ब्रह्मराक्षस का उन्नत और तेज ललाट है और ज्ञान और सिद्धियों की पूंजी उसके पास है। क्योंकि मुक्तिबोध ने अपने मित्र स्वयं प्रकाश को कहा है, ''कोई ऐसा कोई कमरा होनाचाहिए जो किताबों से भरा होना चाहिए और ऐसा कोई पात्र भी होना चाहिए जिसकी टोंटी घुमाते हुए ही गर्मागर्म चाय मिल जाए।''४ वस्तुतः एक अध्यापक के रूप में उनकी नियुक्ति १९५८ में हुई थी परन्तु शिक्षा के पश्चात वे पूर्व रूप से अध्यापक की इच्छा थी। पत्रकारिता और संपादन तो उनके शौक ही रहे है। कहानी में गुरू और शिष्य दोनों यंत्रवत जीवन जीने लग रहे हैं और समय पर भोजन करना और समय पर दूसरी दैनिक क्रियाएं करने की बात करता है। वह इतना सिद्ध है कि जादुई कार्य भी कर सकता है, वह आवश्यकता पड़ने के लिए अपने हाथ लम्बे कर सकता। उसके रूप में मुक्ति बोध का गुरू ब्रह्मराक्षस अंत में जब वह अंनत में विलिन होता है अपने शिष्य को सब कुछ सौंप देता है। क्योंकि वह ज्ञानी है और वह यह भी जानता है कि वह ऐसा नही करेगा तो मोक्ष नही मिलेगा।

ब्रह्मराक्षस एक मर्यादा और व्यवस्था का गुरू है परन्तु वह एकांत का गुरू है। यदि उसे लगता है कि वह उसके पास कोई शिक्षा ग्रहण करने आएगा। तो, वह उससे शिष्य बनाने से पूर्व सवाल करेगा। इस शिष्य से भी उसे सवाल करने है जिनमें पहला सवाल यही है, ''तुमने तय कर लिया है कि बारह वर्ष तक तुम इस भवन से बाहर पग नही रखोगे?''५ सब ठीक रहा और शिष्य की शिक्षा आरम्भ हो गया। ''लड़के को हर्ष हुआ। उसने उसके दरवाजे पर माथा टेका, आनंद के आँसू आँखों में आ गए। लगता था उसे स्वर्ग मिल गया।''६ गुरू जी की प्रवृति पूजा पाठ वाली भी थी इसलिए जीवन की सभी धार्मिक क्रियाओं को भी अमल में लाया करते थे। गुरू ने उसे रूप से आरम्भ कर अध्ययन को सिद्धांत कौम ही तक ले आए। बहुत सारा ज्ञान उसने अपने शिष्य को आत्मसात करा दिया। वह देहाती बोली को छोड़कर संस्कृत में भाषिक संप्रेषण के साथ व्यावहारिक संप्रेक्षण भी सिद्ध रूप में करने लग गया था।

कहते हैं मनुष्य को मस्तिष्क उसके जीवन का चालक और नियंत्रक दोनों है। मस्तिष्क के विचार मनुष्य का व्यवहार बनते है। इस दृष्टि से गुरू की सोच भी गुरू को ब्रह्मराक्षस बनाती है। यह ब्रह्मराक्षस एक अलग रूप का है। ब्रह्मराक्षस के रूप में मुक्तिबोध के दो पात्र है एक कहानी में और एक कविता में, यह दोनों का सूक्ष्म अंतर ही है। उपजी हुई सामाजिक परिस्थितियों ही यह अंतर भेद करती हैं। कथ्य के रूप में ब्रह्मराक्षस का शिष्य कहानी में एक गुरू की ज्ञान प्रणाली के साथ उसके जीवन और शिक्षा प्रबंधन की परिस्थितियों के बारे में बताया है। साथ गुरू की जीवन कौशल की पहुंच और उसकी सिद्धियों के संदर्भ भी वर्णित किए गए हैं। सोचनें के लिए गुरू के बारे में कुछ भी कहा जा सकता परन्तु गुरू की व्यवहार योजना, उसके शिष्य के प्रति, इसको कर्त्तव्य योजना भी कहा जा सकता है, सुंदर है, ''तुम आए मैंने तुमकों बार-बार कहा लौट जाओं कदाचित ज्ञान के लिए तुम आवश्यक श्रम और संयम में ना हो।''७

जीवन की उहापोह से गुरू जी उपर है। सिद्ध है संयमी है और अपने ज्ञान और सिद्धियों द्वारा

अपने शिष्यों को मन जीतने वाले है यह व्यक्तित्व का आकर्षण उन्हें पाठक के हृदय की ओर ले जाता है। यह सत्य है।

गुरू और शिष्य की सम्बंध की परम्परा भारतीय प्राचीन परम्परा में से एक है। जीवन में अपने मन के संदर्भों की अभिव्यक्ति व्यक्ति की विचारधारा बन जाती है। गुरू का सुंदर चरित्र मुक्तिबोध की इस कहानी रचना का उद्देश्य होता है। अंनत प्रस्थान का ऐ संदर्भ लेखक ने कहानी में प्रस्तुत किया है, ''शिष्य, आओं, मुझे विदा करो, अपने माता और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना है।''८

कहते हैं कि सच्चा गुरू सच्चे शिष्य का निर्माण करता है। ब्रह्मराक्षस का शिष्य भी उसी श्रेणी का शिष्य है। वह अपने कर्त्तव्य से प्रभावित होकर नही, अपनेपन के कारण अपने गुरू जी की अंनतयात्रा पर दुखी होता और आँसू बहाता है। ''शिष्य ने साश्रुमुख ज्यो ही चरणो पर, आशीर्वाद का अंतिम कर स्पर्श पाया और ज्यो ही सिर उठाया तो वहाँ से ब्रह्मराक्षस तिरोधान हो गया।''९

कुल मिलाकर रस की दृष्टि से कहानी दुखांत और करूणरस के बाहुल्य वाली है। खड़ी बोली में युक्तिबोधीय लेखन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शैली का वर्णन पीछे किया जा चुका है पूर्वदिप्ती शैली है। अतः ब्रह्मराक्षस का शिष्य कहानी की वस्तु और शिल्प का अध्ययन इस बात की ओर संकेत करता है कि दोनों दृष्टियों से यह उच्च कोटि की विधा है। मुझे इसके साथ यह भी लगता है कि उपलब्धियों और ज्ञान का ऐसा संयोग अन्यत्र दुर्लभ है। जीवन में अनुशासन का होना व्यक्ति की सबसे बड़ी पूंजी हैं। मुक्तिबोध की यह कहानी, जनवरी १९५७ में प्रकाशित हुई थी।

संदर्भ सूची –

१. ब्रह्मराक्षस का शिष्य, गजाननमाधव मुक्तिबोध पृष्ठ १०२
२. वही पृष्ठ १०३
३. वही पृष्ठ १०४
४. मेरी डायरी, स्वयं प्रकाश, पृष्ठ १००
५. ब्रह्मराक्षस का शिष्य, गजानन माधव, मुक्तिबोध १०५
६. वही पृष्ठ १०६
७. वही पृष्ठ १०७
८. वही पृष्ठ १०८
९. वही–१०९